Gupta period (Part -20)

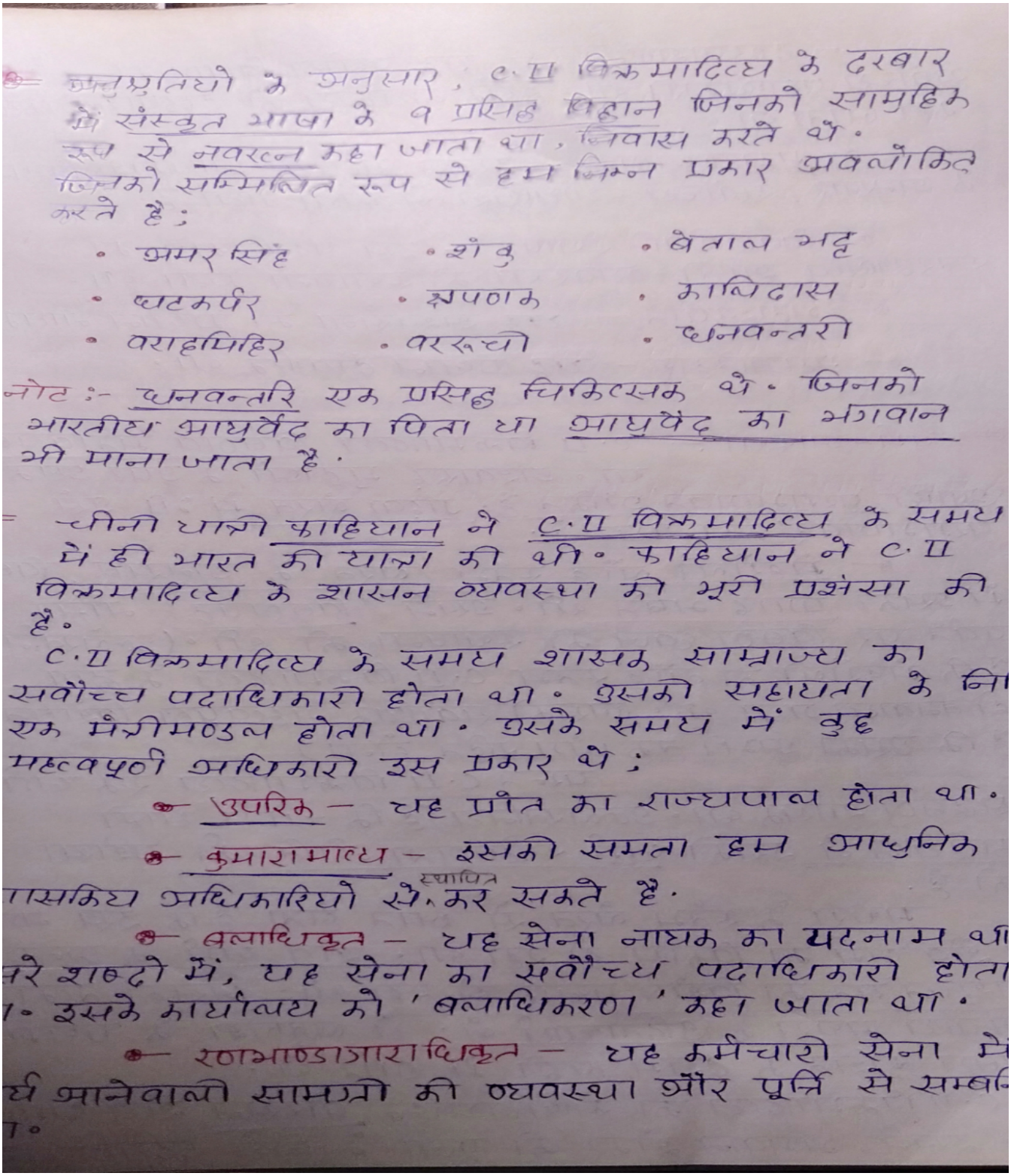

● अनुश्रुतियों के अनुसार, C.II विक्रमादित्य के दरबार में संस्कृत भाषा के 9 प्रसिद्ध विद्वान जिनको सामूहिक रूप से नवरत्न कहा जाता था, निवास करते थे. जिनको सम्मिलित रूप से हम निम्न प्रकार अवलोकित करते हैं;

- अमर सिंह
- शंकु
- बेताल भट्ट
- घटकर्पर
- क्षपणक
- कालिदास
- वराहमिहिर
- वररूची
- धनवन्तरी

नोट :- धनवन्तरि एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे. जिनको भारतीय आयुर्वेद का पिता या आयुर्वेद का भगवान भी माना जाता है.

= चीनी यात्री फाहियान ने C.II विक्रमादित्य के समय में ही भारत की यात्रा की थी. फाहियान ने C.II विक्रमादित्य के शासन व्यवस्था की भूरी प्रशंसा की है.

C.II विक्रमादित्य के समय शासक साम्राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था. उसकी सहायता के लि एक मंत्रीमण्डल होता था. उसके समय में कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी इस प्रकार थे;

● उपरिक - यह प्रांत का राज्यपाल होता था.

● कुमारामात्य - इसकी समता हम आधुनिक ासकिय अधिकारियों से स्थापित कर सकते हैं.

● बलाधिकृत - यह सेना नायक का पदनाम था रे शब्दों में, यह सेना का सर्वोच्च पदाधिकारी होता . इसके कार्यालय को 'बलाधिकरण' कहा जाता था.

● रणभाण्डागाराधिकृत - यह कर्मचारी सेना में र्य आनेवाली सामग्री की व्यवस्था और पूर्ति से सम्बन्

- दण्डपाशाधिकृत – यह पुलीस विभाग का सर्वोच्च पदाधिकारी था। इसके कार्यालय को दण्डपाशाधिकर कहा जाता था।
- महादण्डनायक – इसका तात्पर्य अधिकांश विद्वा के अनुसार, सर्वोच्च न्यायाधिश से लिया गया है।
- विनय स्थिति स्थापक – इस पदाधिकारी का उत्तरदायित्व शांती-व्यवस्था की स्थापना करना था।
- महाश्वपति – यह अश्वसेना का प्रधान नायक
- महाप्रतिहार – यह प्रधान द्वारिक था।

- धर्म-आस्था :– C.II विक्रमादित्य वैष्णव मतावलं था। अश्वारूढ़ मुद्राओं के ऊपर उसक उपाधि 'परमभागवत' अंकित है। गढ़वा बैरव में भी उसे 'परमभागवत' कहा गया है।
- मेहरौली लौह स्तंभ बैरव के अनुसार, वि में उसकी प्रगाढ़ भक्ति थी। उसने "विष्णुपद" नामक पर्वत पर विष्णु ध्वज की स्थापना की थी। (उल्लेखनी है कि मेहरौली का लौह स्तंभ C.II विक्रमादित्य के द्वारा ही बनवाया गया था। जिसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषत है कि उसका अभी तक जंग रहित होना)

परन्तु C.II विक्रमादित्य एक धर्म सहिष्णु शासक था। उल्लेखनिय है कि चीनी यात्री फाहियान ने इसकी धर्म सहिष्णुता नीति की प्रशंसा की है।

मथुरा के स्तंभ बैरव से ज्ञात होता है कि इस क में शैव धर्म का विकास हो रहा था। शैव धर्म के अन्तर्ग पाशुपत मत का विशेष प्रचार हो रहा था। जिसका तत्का आचार्य मथुरा के उदिताचार्य थे। ये लकुलिश के प्रथम शिष्य कुशिक के दशम् पिढ़ी में आते थे।

C.II विक्रमादित्य का संधिविग्रहिक वीरसेन शैव धर्मा था। इसने भगवान शंकर की पूजा के लिये उदयगिरि

पर एक गुफा का निर्माण कराया था।

नोट – उल्लेखनीय है कि संधि विग्रहिक संधि तथा युद्ध का मंत्री होता था। जिसके अधिन विदेश विभाग भी होता था। उल्लेखनीय है, कि समुद्रगुप्त का संधि विग्रहिक विभाग हरिषेण के पास था।

C.II विक्रमादित्य का सेनापति आम्रकार्दव बौद्ध धर्मावलंबी था। जिसने सांची महाविहार (कामनादबोट) को 25 स्वर्ण मुद्राये (दिनार) दान में दिया था। इस धन से विहार में रत्नगृह में दिपक जलाने का व्यय तथा पाँच भिक्षुओ के भोजन का खर्च चलाया जाता था। आम्रकार्दव को C.II विक्रमादित्य ने ही उच्च सैन्य पद पर नियुक्त किया था।

= अपने पिता की तरह C.II विक्रमादित्य भी विद्यानुरागी था। कालिदास ने संभवतः इसी को लक्ष्य करते हुये कहा था – स्वभाव से परस्पर विरोधी स्थानो में रहनेवाले लक्ष्मी और सरस्वती ने इस नरेश में अपना निवास स्थान बना लिया था।

राजशेखर ने काव्य मीमांशा में जिस 'शहशांक' नामक सम्राट का उल्लेख किया है, वह C.II विक्रमादित्य ही है। जिसने अपने अंतःपुर में एकमात्र संस्कृत भाषा के प्रयोग की ही अनुमति दे रखी थी।